मनुष्य बनो

बा०मू
७-०

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

रक्षक
दयाल फकीर चन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ७—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र. ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३१	बैशाख सं० २०३८ वि० मई, १९८१	संख्या ७

माया-छाया

लेखक कुबेरनाथ श्रीवास्तव

कहते हैं जो सम्बन्ध वृक्ष को छाया से और ब्रह्म को माया से है, वही सम्बन्ध पुरुष को प्रकृति और मर्द को स्त्री से है। मैं कहता हूँ कि जितनी दूरी से वृक्ष छाया से प्रेम करता है, उतनी ही दूरी से प्रेम करता रहे तो वृक्ष और छाया दोनों की कुशलता है। अगर वृक्ष छाया से अधिक प्रेम करने के हेतु झुकेगा. तो उसकी जड़ उखड़ जायेगी और वह टूट कर गिर पड़ेगा व पेड़ सूख जायेगा और छाया लुप्त हो जायेगी। यही दशा मर्द का औरत से और धनी का धन से सीमा से अधिक प्रेम करने में है। स्त्री से सन्तान प्राप्त करने एवं गृहस्थी कार्य में सहायता लेकर के प्रसन्नता प्राप्त करना चाहिए। धन कमाकर अपनी आवश्यकता पूरी करनी चाहिए। इससे अधिक प्रेम करोगे तो मारे जाओगे। इसका समर्थन कबीर साहब इस प्रकार से करते हैं-

कबीर माया रूखड़ी, दो फल की दातार।
खाये खर्चे, मुक्ति दे, संचय नरक द्वार॥

संचय का अभिप्राय: अधिक प्रेम करने से है, प्रत्येक वस्तु के प्रेम की सीमा की मात्रा का ध्यान रखने से प्रसन्न रहोगे, और सीमा पार कर जाओगे तो प्रसन्नता खो जायेगी।

धन व स्त्री व माया, आग व नमक के समान हैं, अगर आग का प्रयोग सीमा से अधिक करोगे तो खाना जल जावेगा, और यदि नमक का प्रयोग सीमा से अधिक करोगे तो भोजन को नहीं खा सकोगे। और यह दोनों बजाय तुम्हारे प्रसन्नता के तुम्हारे दुख का कारण हो जायेगी। इसलिए आग की चिनगारी को गुलाब का फूल और पीसे हुए नमक को चीनी मत समझो। यही माया धन व स्त्री व माया के प्रयोग का भी है। इससे सचेष्ट व सतर्क होकर उचित मात्रा में काम हेतु प्रेम करो और काम निकलने पर इनको भूल जाओ। अधिक प्रेम करोगे और इनमें लम्पट हो जाओगे तो तुम्हारी वही दशा होगी, जो सम्राट शाहजहाँ की हुई, जिसकी कथा निम्नलिखित है।

हिन्द के सम्राट शाहजहाँ की बेगम ताजबीबी थी, चूँकि वह शाहजहाँ की कुल बेगमों में अधिक सुन्दर सुशील और सभ्य थी, इसलिये शाहजहाँ ने उसका नाम ताजबीबी रखा, जिसका भावार्थ औरतों में शिरोमणि है। शाहजहाँ उससे बहुत प्रेम करता था और उससे प्रसन्न रहता था संयोग वश वह रोग ग्रसित हो गई और चोला छोड़ने को जब हुई तो शाहजहाँ ने उससे पूछा प्रिये! तुम्हारी क्या लालसा है? कहो। मैं उसको पूरा करूँगा। उसने कहा कि हमारी कब्र को इतना विशाल बनवाना कि संसार भर में उतनी विशाल कोई दूसरी इमारत न हो। शाहजहाँ ने कहा मैं ऐसा ही करूँगा। तुम विश्वास रखो, यह सुनकर ताजबीबी ने हर्ष पूर्वक प्राण त्याग दिया। ताजबीबी मरने से बादशाह इतना शोकातुर हुआ कि उसके सारे बाल सफेद हो गये। मगर वह अपने प्रण को नहीं भूला उसको रुपयों की कमी नहीं थी। उसके दादा अकबर और पिता जहाँगीर का जमा किया हुआ खजाना था। उसने सोचा कि जब हमको ऐसी इमारत बनवाना है। जो संसार में अद्वितीय हो तो उसके बनाने वाले कारीगर व मजदूर भी ऐसे होने चाहिए जो धन का मोह न करते हों।

इसकी परीक्षा लेकर उनको नियुक्त करना होगा । इनके द्वारा जो इमारत बनाई जावेगी वह सब इमारतों में शिरोमणी होगी । जैसे हमारी बेगम सब बेगमों में ताजबीबी शिरोमणि थी । उस इमारत का नाम ताजमहल रखा जावेगा । जो आदमी रुपयों का मोह करेगा । वह रुपयों के बचाने हेतु इमारत की लागत कम कर सकता है । और इमारत खराब हो सकती है । जो आदमी रुपया व समय का मोह करता है उसको मैं इस ताजमहल के बनाने में नियुक्त नहीं करूंगा । जमुना नदी के किनारे जहाँ पानी गहरा था । वहाँ उसने जाल लगवा दिया । और वहाँ पर रुपयों की थेलियों का ढेर लगवा दिया । कारीगरों व मजदूरों को बुलवाया और उनसे यह कहा कि इन रुपयों की थेलियों को जमुना नदी में फेंकों जो आदमी रुपयों के मोह में पड़कर उनको फेंकने में हिचकिचाया, उसको निकाल दिया । और जो जो लोग आँख बन्द करके निर्मोह होकर फेंकते रहे, उन्हें ताजमहल बनाने हेतु नियुक्त किया । उनसे कहा कि हमें ऐसी इमारत बनवाना है । जो संसार में अद्वितीय हो । तदोपरान्त ताजमहल की इमारत बनाने में २० साल लगे और २० करोड़ रुपये लगे । जिसको बने लगभग ३०० वर्ष हुए । मगर आज भी उसको देखने से मालूम पड़ता है कि अभी कल की बनी है । पता नहीं कि वह किन मसालों से बनी हुई है कि बजाय बूढ़ी होने के दिन प्रतिदिन जबान होती चली जा रही है । उस समय का एक करोड़ रुपया इस समय के एक खरब रुपयों से अधिक होगा ।

इस कार्य में शाहजहाँ ने दो चूक किया । पहला चूक तो उसने यह किया कि ताजबीबी को इसकी सुन्दरता के कारण उसको मात्रा से अधिक दिल दे दिया । और ताजबीबी को सीमा से अधिक प्रेम किया, जो उसके विचारों की छाया थी । ताजबीबी मर गई और उसका दिल विचलित हो गया, उसने अपने चिन्तित विचार को एकाग्र करने हेतु ताजमहल को बनवाना प्रारम्भ किया । जब तक ताजमहल बनता रहा उसका चित्त एकाग्र रहा ।

दूसरी चूक यह थी कि उसने ताजमहल को सीमा से अधिक प्रेम किया जो ताजबीबी के ही तरह उसके विचारों की छाया थी । इस

कारण ताजमहल बनने के बाद उसका दिल विचलित हो गया। वह इस रहस्य को समझ नहीं सका और इसके रहस्य समझने हेतु किसी को गुरू धारण नहीं किया। दिल की दोचताई ने भयंकर रूप धारण किया, वह बीमार पड़ा अपने को सम्भाल न सका। और उसके बेटे औरंगजेब ने सहज ही में उसको बन्दी बना लिया।

स्मरण रहे कि नाशवान बस्तु को दिल देना उसके विनास का कारण हुआ।

सारांश यह है कि प्रकृति माया है। इसको स्त्री व छाया समझो, इससे प्रेम किये बिना तुम जीवित नहीं रह सकते मगर इससे इसी सीमा तक प्रेम करो। कि जीवित रहो। अर्थात जीवन के निर्वाह हेतु सीमा पार कर जाओगे। तो प्रसन्नता व स्वास्थ खोकर तुम्हारी वही दशा होगी जो सम्राट शाहजहाँ को सीमा पार करके ताजबीबी व ताजमहल के प्रेम करने से हुई। अगर हमारी बात समझ गये तो संसार तुम्हारे हेतु स्वर्ग है। अगर नहीं समझे तो नर्क है। और तुम्हारी वही दशा होगी जो शाँहशाह शाहजहाँ की हुई।

सबको राधास्वामी !

—o—

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल पं० फकीरचन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर

१५-३-८१

नया बर्ष चैत महीना आपको मुबारिक हो। आध्यात्मिकता या Se'f realition की गूढ़ Philosphy राधास्वामी मत में स्वामी जी की चैत मास की वाणी से मिलती है जिसकी मैं आज व्याख्या करके आप लोगों को सुनाता हूँ। स्वामीजी की वाणी है —

चैत महीना आया चेत, बाधा सतगुरु भौ में सेत,
जात चिताये जो थे वार, भौसागर से कीन्हे पार।

भव सागर क्या है ? जिन्दगी का नाम भवसागर है। मन के जितने ख्यालात आत्मारूी विचार हैं यह सब भवसागर हैं और हम इस भवसागर में रहते हुए दुख सुख उठाते हैं। कई लोग कहते हैं आत्मा लाफानी है। मैं नहीं कहता कि वो गलत कहते हैं। अगर आत्मा लाफानी है तो आत्मा तो जन्मता मरता रहेगा, आता रहेगा। जब लाफानी हुआ तो कहीं तो फँसा न कभी इस चोले में कभी उस चोले में, कभी इधर कभी उधर। यह ऐसा मामला है जिसे मेरा दिमाग हल नहीं कर सकता। मैं तभी तो कहता हूं कि जो बड़े बड़े आदमी हैं वो किताबों का हवाला न दे बल्कि अपने जीबन का अपना अनुभव ब्यान करे तब यह मामले साफ होंगे। हम तो किताबों में लिखी है वो कहते हैं। भव-सागर से पार होना क्या है ? सतगुरु ने क्या पुल बाँधा ? सत्संग। उसने क्या किया। जो भव-सागर के इस ओर थे इनको समझा बुझा कर भब सागर से पार कर दिया। जैसे मैंने कहा कि मैं इस मन रूपी चक्कर में अब फँसा नहीं। मन के चक्कर में रहता हूँ मगर फसता

नहीं। क्योंकि मुझे यह ज्ञान होगया कि जितने रूप रंग, शक्लें बनती हैं, ख्यालात व विचार उठते हैं यह सब माया है। इस एक ज्ञान ने मेरी जिन्दगी का तख्ता बदल दिया। मेरा खून मेरा शरीर मेरे ख्यालात, मेरा मस्तिष्क और मेरे व्याख्यान करने का ढंग सब बदल गये। और इसी एक बात को पर्दे में रख कर अक्सर इन धर्म वालों ने हम गृहस्थियों को मूर्ख बना कर लूटा है। मैं यह दर्द दिल से कह रहा हूं। लोगों के अन्दर मेरा रूप प्रगट होता है, बड़े चमत्कार करता है और मैं हैरान होता हूँ कि मेरे तो बाप को पता नहीं होता। अगर मैं आपको यह सच्ची बात नहीं बताता तो मुझे जो पैसा आकर दोगे मेरी खिदमत करोगे वो रुपया मेरी जान को खाजायगा क्योंकि मैंने आप लोगों के साथ धोखा दिया आपको सच्ची बात नहीं बताई कि मैं तुम्हारे अन्दर नहीं गया। यही एक भेद था जिस भेद को मैंने खोला। वो मैं यह भी जानता हूं कि इस खोलने की हानि भी है कि लोगों का अज्ञान का जो विश्वास है वह टूटता है। मगर इस अज्ञान के विश्वास का परिणाम क्या है? विभाजन में क्या हुआ? मुसलमानों ने समझा हजरतअली सहायता करता है, सिक्खों ने समझा अकाल पुरुष सहायता करता है, हिन्दुओं ने समझा महादेव सहायता करता है और सिर कट गये। इस अज्ञान का परिणाम यह हुआ कि इन्सानी नसल बट गई और हमारा आपसी सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि मेरे जिम्मे duty है—

तेरा रूप है अदभुत अचरज, तेरी उत्तम देही,
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही।

अतः मैंने जगत कल्याण को view में रख कर के इस भेद को खोल दिया ताकि समझदार व्यक्ति हैं वो धार्मिक तऊखत में न आयें। तुम्हारी इच्छा है तुम राम को पूजो, तुम्हारी इच्छा है तुम कृष्ण, देवी वा गुरू को पूजो। वो तुम्हारा अपना ही मन है। अतः आप किसलिये आपस में झगड़ा करते हो। जो शक्ति एक आदमी देवी की पूजा से ले सकता है वो ही एक शक्ति फकीरचन्द मुहम्मद या कृष्ण के रूप से ले सकता है। फिर हमारा झगड़ा क्यों? मैंने इस बात को इस खयाल से जाहिर किया है। मेरे स्पष्ट

कहने से अज्ञानी जीवों का जो भुतब्व भी है उनको अन्धविश्वास में धक्का पहुँचता है। मगर यदि वो अन्धबिश्वासी रहेगा तो वह इस भवसागर से पार नहीं जा सकते। एक व्यक्ति राम का, कृष्ण का या किसी गुरू का सारा जीवन विश्वास रखता है तो वो जन्म मरण से तो नहीं बच सकता। क्योंकि वह किसी दूसरे का सहार लिए हुए है तथा वह जो सहारा है वह उसके मन का बनाया हुआ है और मन ही भवसागर है। मैंने अपनी नीयत से बिल्कुल सचाई से काम किया है। तुम्हारा अज्ञान क विश्वास ठीक है मगर यदि अज्ञान का विश्वास रखोगे तो तुम भवसागर से पार नहीं जा सकते पार तो तब जाओगे जब तुम मन को छोड़ जाओगे।

जीव चिताये जो थे वार, भौ सागर से कीन्हे पार।

भव सागर से कैसे पार किये ? मैंने आपको बता दिया कि मुझे नहीं पता। राधास्वामी दयाल या और सन्त संसार के कैसे पार करते हैं। मैं जैसे पार हुआ मैं वो बताता हूं कि केवल मन माया के रूप का विश्वास हो जाय कि यह माया है, है नहीं और वास्तबिकता की समझ आने पर इस एक बात ने मुझे भवसागर से पार होने का अबसर दिया। यही बात तुलसीदासजी ने रामायण में कही है। वह कहते हैं--

दो गोचर यहाँ लग मन जानी, तहाँ लग मरण करत जानी।

और भई। क्या अन्तर है महाराज। अब जो राम का ध्यान करता है। तुलसीदास के कहने अनुसार क्या वो माया नहीं है। जो कृष्ण ब बाबा फकीर का ध्यान करता है या जिसके अन्दर देवी देवता प्रगट होत हैं क्या वो माया नहीं हैं ? कोई अन्तर नहीं। अन्तर केवल यह है कि किसी ने इस सचाई को ब्यान नहीं किया। मैं हैरान होता हूँ। मैं सनातन धर्म या सन्तमत में काई अन्तर नहीं समझता। राधास्वामी मत सनातन धर्म की पूर्ति मार्ग की एक शाखा है। बस इसके सिबाय और कुछ नहीं। राधास्वामी मत जो है कबीर-मत ने अगली stages को साफ करके ब्यान किया। सनातन धर्म की किताबों में इशारा है। मैंने सनातन धर्म शब्द छोड़ कर मानब धर्म नाम रख लिया—

भव सागर अति गहिर गम्भीर, सतगुरु पूरे बाँधी धीर ।

भव सागर कितना गहरा है । शारीरिक बोधभान, भवसागर, मानसिक और आत्मिक बोधभान सब भवसागर है । इसमें क्या है ? पूरे गुरु ने धीर्य और हौसला दिया कि चल ! तुझे पार कर दूँगा ।

तन मन धन की लई जुगात, शिष्य उतारे गहि कर हाथ ।

अहा, हा हा ! तन मन धन की जुगत यानी बसूल या चुंगी गुरु लेता है । किसी का माल शहर जाना हो तो चुंगी लेते हैं कि नहीं । इस रास्ते जो पार गुरु तन मन धन लेता है । गुरु ने यह समझा हुआ है कि तन से गुरू की सेबा करते रहो, मन से गुरु की सेवा करते रहो तथा धन देते रहो यह गलत है । तन मन, धन की जुगत का अर्थ क्या है ? इन्सान सत्संग में बैठ कर बात को समझो और उसको गुरु यह विश्वास करा देते कि मूर्ख ! तू शरीर, मन है, यह धन आदि तेरा नहीं है । जिस व्यक्ति को इस बात का ज्ञान हो जाता है तथ वैराज्ञ हो जाता है केबल वही व्यक्ति इस भव से पार होता है दूसरा नहीं । गुरु को लाखों रुपया दे दो तुम भव सागर से पार नहीं होगे तुम गुरु की शरीर से जितनी सेवा करते रहो तुम भवसागर से पार नहीं होगे । भवसागर से पार तुम तब होगे जब तुम्हारे मन में यह विश्वास हो जायगा कि यह शरीर तो मेरा नहीं है, यह मन के ख्यालात भी मेरे नहीं हैं, धन अपने आप ही चला जाएगा । जब तक किसी के मस्तिष्क के अन्दर यह बिश्वास नहीं आता वह सिर पटक के मर जाये वह भवसागर से पार नहीं हो सकता This is the truth दुनिया ने समझा नहीं है – तन मन धन की लई जुगात, शिक्षा उतारे गहि कर हाथ ।

जब इन्सान अपने मन से यह समझ लेता है तो अपने आप ही भबसागर से पार हो जाएगा । उसका attachment ही नहीं रहेगा । भवसागर मे पार होने का अर्थ है यह है कि इन चीजों से उसका बन्धन नहीं रहेगा । खेद जो मैं कहना चाहता हूं मुझे पूरे शब्द नही मिलते । दुनिया ने इन शब्दों के गलत अर्थ समझे और गुरुओं ने सचाई न बता कर अपनी जायदादें, अपनी मोटरकारें और अपनी जागीरें बनाली । मतलब यह है कि बाहरी गुरु सत्संग

... और फिर जरमानियत को भूल कर स्वप्न में चले जाना ऊपर आना। इसका नाम बंकनाल है। सुरत कितनी नीचे जाती है फिर ऊपर जाती है। जो प्रत्येक stage पर होता है। इसको संधि बोलते हैं, सन्ध्या। जाग्रत या स्वप्न अवस्था के मध्य एक बक नाल है। स्वप्न से सुषुप्ति की अवस्था के मध्य दूसरी वंक नाल है। सुषुप्ति से तूरिया की अवस्था में तीसरी वंक नाल है। इस तरह बंक नालें कई हैं। तो क्या होता है? हमारी हस्ति जो है एक अवस्था से गुजर कर दूसरी अवस्था में चली जाती है। तो जिससे गुजरती है उसमें हम गुम या नष्ट हो जाते हैं। इसका नाम बंक नाल है। जो मैंने समझा है। शब्द राधास्वामियों का वंक नाल कोई और हो। मैं नहीं जानता--

सुख सुना और धुन ओंकारा, शब्द गुरू का घाट निहारा।

मैंने एक पुस्तक लिखी है कि यह शब्द घंटा, शंख ओंकार, मुरली और वीणा क्यों वजती है? यह जितनी अवस्थायें हैं यह हमारे जीवन की प्रकृति के बोधभानों के खेल हैं। इसकी बहुत बदाहत कर चुका हूं। जब से मुझे यह ज्ञान हुआ कि यह मन के दर्जे हैं तो अब मैं लाख प्रयत्न करूं कि मुझे घण्टा, शंख सुनाई दे अब नहीं आते। क्यों? क्योंकि मैं मनरूपी चक्कर स निकल गया। यह चक्कर मेरे मन के बोधभानों के थे। क्योंकि मुझे ज्ञान हो गया यह सब माया और मन का चक्कर है इसलिए अब इस ज्ञान के होने क कारण नहीं आते। अब आखिरी शब्द आता है जिसको राधास्वामी नाम, सार नाम या निज नाम कहते हैं। इसको सुनता हूं। यही सारा भेद है—

... ... सुरत, त्रिकुटी चढ़े निरखी गुरु मूरत।

करवा कर असली अर्थ समझा देता है इसीलिए सन्तमत में आ... प्रशंसा की गई है--

सुरत बहे थी नौ की धार, ताहि चढ़ाया गगन मंझार ।

जब हम attach होते हैं तो हमारा मन शरीर और ख्यालों की ओर बहता रहता है न। तो जब यह बन्द हो जाते हैं फिर जब इन्सान अपने अन्दर जाता है तो आगे क्या होता है--

गगन जाय धुन शब्द सिहारी, देखा रूप जीत दुति भारी ।

जब मन इस तरह से attachment छोड़ जाता है तो फिर उसके आगे प्रकाश है, ज्योति और शब्द है। मैंने बड़ा अभ्यास किया है। १२-१२ घण्टे किया है। मगर जो अब करता वह और है जो पहले करता था वह और है। मैं सचाई को समझना चाहता था।

दाता दयाल ने जब यह गुरुआई का काम दिया था तो कहा था कि तुमको सच्चा सतगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा जो तुमको मंजिल पर पहुँचायेगा। जब से मुझे मन के रूप और वास्तविकता का ज्ञान मिला। मैं तो आगे जाना चाहता था अतः मैं अब मन को छोड़ जाता हूं। आगे प्रकाश और शब्द है। यह आसान तरीका है—

जोत निहारे देखे तारा, बंक नाल का खोले द्वारा।

मैंने बंकनाल को क्या समझा ? बंक नाल टेढ़े मार्ग को कहते हैं जो पहले नीचे जाता है फिर ऊपर आता है। अब हमारे अन्दर टेढ़ा मार्ग क्या है ? तुम रात को सो जाते हो। तुम देखो, जागते रहो। जब नींद आने लगती है तो क्या होता है ? गुम हो जाते हो। फिर स्वप्न आजाता है। वह जो गुम हो जाना नीचे जाना और ...

था जिसमें फूल लगे हुए थे. बतखें और हंस थे । उसमें एक महात्मा खड़ा था उसको मैं मिला । उसने कहा–अगर पार जाना चाहता है तो मुझे मिला । मैं उस महात्मा की तलाश करता था । जगह जगह गया मगर वह महात्मा मुझे नजर नहीं आया । किसी ने कहा––पंडित फकीरचन्द का सतसंग होता है वहां जाओ । मैंने आपको देखा । आप ही वह महात्मा थे । अब मैं सोचता हूँ कि मैं तो गया नहीं । तो मुझे विश्वास होगया । क्योंकि जब मैं वहाँ नहीं था तो जो कुछ उसने पानी, प्रकाश, फूल, और बतखें आदि देखा । वह क्या था ? तो उसकी अपनी सूक्ष्म प्रकृति, जिस प्रकार के ख्याल Suggestions and impres ions उसके मस्तिष्क पर पड़े हुए थे वही उसके समक्ष शकलें बन कर आये थे । यह जिसकी प्रकृति जिस प्रकार की है उसी प्रकार के नजारे सामने आयेंगे । लाख सिर पटक कर मर गये दूसरे नजारे उसके सामने नहीं आयेंगे । क्योंकि प्रकृति ने जिस प्रकार की प्रकृति उसकी बनाई बनाई है । उसी प्रकार का नजारा आयेगा क्या किसी मुसलमान के अन्दर राम या कृष्ण प्रगट हुआ ? या किसी हिन्दू के अन्दर हजरत मुहम्मद या अली प्रगट हुआ ? क्यों नहीं हुआ ? क्योंकि इनका संस्कार उन पर नहीं था बस इतना ही भेद है । अत राधास्वामी मत में पूरे गुरू की आवश्यकता है । किताबों का ज्ञान काम नही करता गुरू को ढूँढो और गुरु को अपने अनुभव बताओ । वह तुमको तुम्हारी प्रकृति के अनुसार तुमको उस मंजिल तक पहुँचा देगा । यह आवश्यक नहीं है कि एक इन्सान सारी मंजिलें या नजारे जो किताबों में लिखी है वो सब उसको नजर आयें । मगर वह मंजिल पर पहुँच सकता है जैसे मुझे पता लग गया कि यह मन का चक्कर है अब मैं इसमें फँसता नहीं और मेरे लिये इस चक्कर की आवश्यकता नहीं –

हंसन साथ करी जाय जारी, सुरत सखी की सबकी प्यारी ।

अब देखो मैं इन हंसन को देखता देखता मर गया । मेरी समझ में हंस क्या आये ? मैं यह समझता हूँ कि शरीर में खून में Rad corsplus or while corspus है अगर वह––खत्म हो जायें तो खत खत नहीं बल्कि पानी हो जाएगा । हमारे अन्तर जो प्रकाश आता है उसके जो अणु या किरणें

हैं यदि वो न हों तो वह Stage नहीं रहती । तो हमारे अन्तर जो प्रकाश-रूपी अणु पैदा होते हैं वो जो किरणें हमारे अन्तर आती है वो हंस है । इस प्रत्येक किरण ने मानवीय किरण मौजूद है । जिस प्रकार के एक बड़ के बीज में एक वृक्ष मौजूद है और एक किरण में सारा सुर्य है जब इनसे हम मिल जाते हैं तो हमारा मन साफ हो जाता है । उनके प्रभाव से हमारी जवान अच्छी हो जाती हे ।

हम सबसे प्रेम कर लेते हैं, मैं ऐसा समझता हूं । मैं चाहता हूँ कि राधास्वामी में जो गुरु हैं यह मुझे हिदायत करें । अगर मैं गलत हूँ या उन्होंने हंस देखे हैं तो मुझे बतायें । मेरे अन्दर भी पहले रूप नजर आते थे । मगर जब मैं किसी के अन्दर नहीं होता तो मैं कैसे मानूं कि कोई बाहरी हंस आदमी के अन्दर आते है । यह सब इन्सान के अपने ही मन का खेल है—

सुन्न शहर में कुछ दिन बसी, फिर चढ़ ऊपर आगे धसी ।

सुन्न शहर क्या है ? वे ख्याली की हालत निर्विकल्प अवस्था का नाम सुन्न है । कुछ दिनों सैर करने के बाद जिसको आने जाने की आवश्यकता होती हैं तो फिर वो सुरत आगे चलती है—

महासुन्न एक नगर अपारा, कहूँ कहा अचरज बिस्तारा ।

यह गहरी समाधि की अवस्था है—

घुन यहाँ चार गुप्त अति झीनी, सन्त बिना कोई निरख न चीन्हीं ।

क्यों ? एक व्यक्ति गहरी नींद में चला जाता है । जब तक वह गहरी नींद में Concience नहीं है वहां अन्धकार रहेगा । सन्त जो यह समाधी लगाता है वह गहरी नींद की हालत में रहता हुआ भी अपनी हस्ति का ज्ञान रखता है । क्योंकि वह गहरी नींद में अपनी इच्छा से गया है । अगर कोई गहरी नींद में अपनी इच्छा से न जाये तो उसके लिए सब कुछ गुप्त है । यह चार धुनें क्या है ? मन, चित, बुद्धि अहंकार यह चार जब गहरी समाधी में चले जाते हैं यानि इकट्ठे हो जाते हैं वहाँ जो व्यक्ति अभ्यास करता है उसको महासुन्न की Consciousness का ज्ञान होता है और ऐसा व्यक्ति जाग्रत अवस्था में भी सुषुप्ति का आनन्द लेता है—

उचित दीपता दाये रहता, एहज दीप दस पालंग बसता।

आहा, यह देखो, वो कहते हैं सहज दीप। सहज दीप का अर्थ क्या है? आदमी के अन्दर सहज अवस्था आजाती है—

महिमा दीप कहुं भारी, संतोष दीप तहां बांधे सवारी।

अब देखो, अर्थ यह है कि हमारे मन के अन्तर में वहां सन्तोष आजाता है और सहजपन या सहजवृत्ति आजाती है और अजन्तपना आजाता है। वाणियों को इतना रोचक बनाया गया है कि जिसकी कोई सीमा नहीं। जब इन्सान के मन की गहरी समाधी टूट कर चेतवा होकर आगे चलता है तो उसमें सहज अवस्था और सन्तोष आजाता है। मैं ऐसा समझता हूं। अनुभव के आधार पर मैं मानने के लिए विवश हूँ। कि ऊपर के इस लोक में भी जो ऐसी आत्मायें रहती है उनमें सन्तोष और सहज अवस्था यानी शान्ति होनी चाहिए। ऊपर भी इसका कुर्रा है। वह जो मगरूर आत्मायें वहां उस कुर्रे में कैद होती हैं उनकी मलफरत का भी एक जरिया है और वो यह है कि जैसे इस कमरे में गन्दी वायु है बाहर से जब अन्धेरा हो जाएगा तो वो इस गन्दी वायु को भी अपने साथ ले जाएगी। ऐसे ही सन्त की आत्मा जब निकलती है तो मेरे बिचार में क्योंकि वो प्रकाश और शब्द स्वरूप होनी चाहिये तो उस वातावरण से जब वो जायगी तो जो आत्मायें फँसी हुई होंगी तो उसके सम्पर्क में आएगी वो उसकी रोशनी और ध्वनि के सहारे आगे जा सकती हैं। यही उन खराब आत्माओं की आजादी का बाहरी तरीका रखा हुआ है——

वहाँ एक झिरना अजय रचानी, सुरत निरत गही निशानी।

यह वहां की हालत के लिए शब्द झरना (मतलब ऊपर की तरफ खिड़की) बनाया गया है। जब इस अवस्था में अभ्यासी चला जाता है और उसे आगे की तलाश होती है तो फिर वो सन्तोष आदि सब छोड़ कर ऊपर चला जाता हैं यानी अपने आप को इकट्ठा कर लेता है—

देख निशान मध्य को धाई, भँवर गुफा की गली समाई।

जो अभ्यासी है वो समझे। जब इन्सान का ध्यान ऊपर जाता है फिर

उसको यह ज्ञान हो जाता है कि जितना मैंने देखा है सब माया है। तो फिर सुरत नीचे आती है। मगर क्योंकि उसे ख्याल है कि जो कुछ मैं यह देखत रहूं यह नहीं अतः फिर वापिस चली जाती है। चक्कर हो गया। वो ध्यान फिर नीचे आता है। मगर क्योंकि उसे ज्ञान होता है वह फिर ऊँचे चला जाता है। चक्कर खाया। जो उसका चक्कर आदि आकर फिर वापिस चले जाना है यह उसका नाम भँवर गुफा है। अगर सन्तों की और भँवर गुफा है तो मुझे पता नहीं। मैं नहीं जानता। भँवर पानी के चक्कर खाने को कहते हैं। जब इन्सान को ज्ञान हो जाता है मेरे अन्दर जो फुरना फुरती है यह माया है तो जब उसका ध्यान माया में आता है तो फिर अपने आप को उठा कर ऊपर ले जाता है फिर वो वापिस चला जाता है क्योंकि उसको पता होता है कि मेरा रूप और है और यह भँवर गुफा और है इस अवस्था में जो चक्कर होता है मैं इसको भँवर गुफा समझता हूँ। मैं चाहता हूँ यह वर्तमान महात्मा मेरे जीवन मे मेरी बात का खण्डन करें और मुझे समझा दें तो मैं उनका बड़ा आभारी हूँगा। हम लोगों को इन वाणियों ने पागल बनाया हुआ है। मैं स्वयं सारा जीवन पागल रहा। बारह-बारह घण्टे अभ्यास किया कि यह देखने के लिए कि भँवर गुफा, महासुन्न सुन्न क्या है? अब मेरे समझ में आया कि कुछ नहीं। सारा खेल बस मन के बोधभान का खेल है। नीचे से ऊपर तक सारा Feeling of Existance नाम के खेल का अनुभव है। क्योंकि यह जीवन भी एक बड़ा भारी खेल है इसका अनुमान करके तुम इसको जितना इच्छा हो अनुभव से बड़ा करलें—

तिस आगे मैं दान दिखावा, सन्त लोक हो पुरुष पुराना।

जब यह हालत समाप्त हो जाती है अर्थात सुरत का नीचे आकर ऊपर जाना बन्द हो जाता है तो फिर ऐसी अवस्था आजाती है यहां प्रकाश और शब्द के सिवाय कुछ नहीं। वृत्ति और विचार का नीचे आना बन्द हो जाता है। अभ्यास में फिर उसकी जो अवस्था हो जाती है वो हमारी अपनी अवस्था है। सत्त लोक सत है हमारा सत्तापना है। हम वहाँ सत्ता हैं। सत्त लोक ने सत्तपुरुष को

कहा गया है ? पुरुष में सकारात्मक शक्ति होती है, स्त्री में नकारात्मक शक्ति होती है। क्योंकि वह हस्ति है इसमें से शक्ति निकल कर सारे ससार को बनाती है इसलिए इस बस्तु का नाम पुरुष कह दिया है। पुरुष अर्थात जिसमें उन्नति करने का और बढ़ने का पदार्थ मौजूद होता है—

निज पद पाय पुरुष से मिली, देख गली आगे फिर चली।

आहा, मैं कहा करता हूँ कि प्रकाश और शब्द को देखता हूँ फिर उसको जो प्रकाश को देखता तथा शब्द को सुनता है ढूँढ़ता हूँ। इसका भाव यह है कि वहाँ सत्त में रह कर उस चीज की तलाश करती हुई आगे का चलती है—

अलख लोक में किया बसेरा, अगम लोक में जाय डाला डेरा।

जब प्रकाश को देखता हुआ और शब्द को सुनता हुआ अप्रकाशन हो जाता है इस अवस्था नाम अलऊ है जो लखा नहीं जाता। प्रकाश तो लखा जाता है। इसके बाद जो ज्ञान, अनुभव Experience होता है उसका नाम अगम है—

शोभा वहाँ की क्या कह गाऊ, अरब खरब ज्ञशि सूर लजाऊँ।

उन्होंने यह अनुभद से बताया है। यह सारा ब्रह्माण्ड यानी कुल जितने ब्रह्माण्ड या लोक लोकान्तर हैं सब बड़े भारी तत्व से बनते हैं तुम स्वयं भी देखो कितने सूर्य हैं कितने चाँद हैं। काई गिनती है ? इस तरह से वह जो परमतत्व है उसमें तुम अन्दाज लगा लो। अरब खरब, अनगिनत सूर्य, चाँद हुए। यह होने का अनुभव है और ठीक है।

अब अनाम जहाँ रूप न नामा, सन्त करें जा वहाँ विश्रामा।

हम वहाँ से आये हैं यहाँ यह जीवन के बोधभान समाप्त हो जाते हैं। यह मतलव है बस—

सुरत चेत पाया विसमाद, नहिं जहाँ वानी नहिं नाद।

अन्तिम मंजिल क्या है ? वहाँ न वाणी न शक्ल और न रूप है।

वह क्या है ? एक अवस्था है। हम सब उससे निकल कर आये हैं उसमें चले जायेंगे। What is life ? लब खुले और बन्द हुए यह राजे जिन्दगानी है।

आदि न अन्त अनन्त अपार, सन्त का वह निज दरबार।
सन्त सभी वा घर से आये, काल देश से जीव चिताये।
हम सब उसी देश से आये हैं। मगर यहाँ फँसे हुए हैं—
जो चेते लिख ले पहुंचावे, सुरत शब्द मारग बतलावे।

स्वामीजी ने बारह मासे में चैत महीने से चिताने से लेकर वहाँ धुर मालिक कुल तक पहुंचाने का यह सारा मार्ग कहा है। मैंने प्रश्न किया था कि अपने जीवन का अपना अनुभव कह जाऊंगा। सो मैंने कह दिया। मगर कोई दावा नहीं है कि जो मैंने समझा है वह अन्तिम है।

स्वामीजी ने बारह मासे में चैत महीने में चितने ले लेकर वहां धुर मालिक कुल तक पहुंचने का यह सारा हाल बताया है। जो संक्षेप में यह है कि जो आदमी अपने अन्दर वा अख्तियार होकर अपनी इच्छा से गहरी नींद में जाकर अपने आप का अनुभव करता है उससे आगे बह जो कुछ देखता है वह अनुभव करता है उससे भी आगे जाता है तब उसको पूर्ण ज्ञान होता है अर्थात साधन अभ्यास द्वारा शरीर से आगे जाओ, गहरी नींद में जाओ। गहरी नींद में चेतना रहे तो इस दसवें द्वार से आगे जाओ। तब इन्सान को आध्यात्मिक शान्ति मिल कर उसकी कुरेद मिटती और तलाश समाप्त होती और यह अवस्था आकर उसको फिर कुछ जानने की आवश्यकता शेष नहीं रहती। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। सो मैंने बता दिया मगर कोई दावा नहीं है कि जो कुछ मैंने समझा है यह अन्तिम है।

—०—

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल पं० फकीरचन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर

७- २-८०

काश्मीर से आते हुए सत्संगियों ने कश्मीरी भाषा में आरती गाई थी जिसका अर्थ यह है—

१ हम आपको ओंकार स्वरूप जानकर आपकी शरण में आये हैं, आपको पूजने आये हैं। आपको शत-शत नमस्कार हो।

२. हे अन्तर्यामी आपके चरणों में हमारा कोटि-कोटि नमस्कार हो।

३. हजारों, विष्णु, महेश्वर, देवी-देवता और मुनीश्वर लाखों सन्त अवतार नत मस्तक होकर आपके द्वार पर खड़े हैं।

४. अनन्तकोटि सूर्य, चन्द्र, यम और अनन्त विज्ञान के सागर पानी के बुलबुले के सदृश आपके अन्दर समाये हुए हैं।

५ ऋषि, मुनि, देवता सब आपको अपना स्वरूप जानकर आपकी बन्दना करते हैं।

६. मैं आपकी क्या स्तुति कर सकता हूँ। जहाँ व्यास आदि मुनीश्वर भी आपको महामहिमा का अन्त न पाकर मौन हैं।

७ हे नित्य शुद्ध चारों वेद, उपनिषद आपके ही गीत गाते हैं। गोविन्द भी आपको परम तत्व आधार जानकर आपके गीत गाता है।

१. मेरे धर्म तथा कर्म किये बिना ही उस परम सन्त ने मुझे अपना लिया।

२. मेरे मन, प्राण, बुद्धि सब उसके अर्पण हो, उसके ध्यान में मग्न होकर मैं उसके रूप को चारों दिशाओं में देख रहा हूँ।

३. अलख ओंकार के दर्शन अचानक मुझे हुये, मेरे ऊपर दया की दृष्टि करके मुझे भी अगम देश में साथ चलने को कहा।

४. मेरे सारे पाप संताप तथा शापों का नाश करके मेरे जीवन को सुखमय बनाया।

५. मेरा जीवन उसने प्रेम मय बनाया। हे गोविन्द ! जो सन्त सतगुरु की शरण जाते हैं वही मुक्ति पाते हैं।

राधास्वामी। आप लोग कोई बम्बई से कोई आंध्रप्रदेश से आये हैं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तूने यह क्या खेल रचाया है ? मित्रो ! दुखी और अशान्त प्राणी मेरे पास आते है और जो मेरी समझ में आया है तो मैं कहता रहता हूँ कि हम एक दूसरे से इस संसार में पूर्व कर्मों के अनुसार मिलते हैं अर्थात जिस जिस का पिछले जन्म का सुख दुख लेन देन होता है उसके संस्कार से हम एक दूसरे से मिलते हैं। शास्त्र कहते हैं यह संसार लेन-देन का संसार है। इसलिये एक दूसरे का लेना देना भुगतना होता है।

परसों सुभाष ने एक बात मुझे बताई कि पंजाब के एक गाँव का रहने वाला आदमी नबाव हैदराबाद के पास बड़ा भारी अफसर था। वह प्रत्येक वर्ष गाँव आया करता था। यह १९२५-२६ की बात है कि जब वह गाँव आया तो रात को उसने एक स्वप्न देखा स्वप्न में एक बैल उसके सामने आया। उस बैल ने उसे कहा कि मैं तेरा दादा हूं। तुम्हारे इस गांव में एक तेली है। मैं उसके कोल्लू का बैल हूँ। अब मैं बूढ़ा होगया हूँ मगर इसके अभी नौ रुपये देने शेष हैं। अगर तू नौ रुपया दे देगा तो मेरी जान छूट जाएगी। प्रातः जब वह उठा तो नाई उसकी हजामत करने आया। उसने कहा भाई हजामत पीछे करना। यह बता कि इस नाम का कोई तेली अभी गांव में है

उसने कहा है। चलो मुझे उसके पास ले चलो। वो वहाँ गया तेली ने उसका बड़ा आदर किया। उसने पूछा तेरे पास कितने बैल हैं? तेली ने कहा एक ही बैल है। मुझे बैल की आवश्यकता है यह मुझे दे दो। बोलो कितनी कीमत दूँ? तेली ने कहा ९ रुपये दे दो। इसने नौ रुपये दे दिये और बैल लेकर चला। मार्ग में बैल गिर गया और मर गया। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या यह बातें ठीक हैं। मुझे अपने घर के एक वाक्य का पता है। मेरी तीन लड़कियां हैं। बड़ी लड़की की शादी पर मैंने चालीस तोले सोना दिया और बहुत खर्च किया। जब कि दूसरी लड़की की शादी पर मैंने केवल ५ तोले सोना दिया और कुल १५०० रुपये में शादी करदी। मेरी पत्नी मुझ से हमेशा कहा करती थी कि आपने अन्याय किया। बड़ी लड़की को ४० तोले सोना दिया, इसको तुमने कुछ भी नहीं दिया। जब वह मकलावे जाने लगी तो मैंने कहा बेटी। पिछले जन्म का ७००) रुपया मैंने और देना है। अब ले ले मेरा तेरा सम्बन्ध टूट जायगा। लेना हो तो अब ले लो अच्छा होगा जब तू मकान बनाएगी तो मैं यदि जीवित रहा तो दे दूंगा। या तुम अपने भाई से ले लेना या पुरुषोत्तमदास से ले लेना। बात आई चली गई। मेरी पत्नी ने मुझको गलत समझा। चार वर्ष बाद वह बीमार हुई उसका पति उस समय इतना पैसे वाला नहीं था। मेरी पत्नी मुझे मजबूर करती थी मैं हर मास १००-१०० रु० ६ महीने उसकी बीमारी के इलाज के लिए कोयटे भेजता रहा। सातवे मास मैंने पुरुषोत्तमदास को लिखा कि भाई १०० रु० का ड्राफ्ट लेकर मेरे दामाद देसराज को कोयटे भेज दें। और मैं रेलवेपास लेकर अपनी पत्नी को कोयटे छोड़ आया कि जाकर देखले तेरी लड़की मर जाएगी। लक्ष्मी मर गई। यह मेरा अनुभव था।

दूसरा अनुभव मेरा लड़का शाहपदम जंग पैदा हुआ। उस समय मेरे अनुभव ने कहा मैंने इसका देना है लेना नहीं। वो ३०००) रु० आमदन लेता है। मैंने आज दिन तक उसकी कमाई का एक पैसा नहीं खाया। अपनी बहिन के लिए भेजता है। मेरा प्रबन्ध बाहर बना हुआ है। मैं उससे नहीं लेता और न ही मैंने लेना है। एक बार रूस से घड़ी ले आया। मैंने

कारखाने में उतार कर रखीं कोई लेगया । मैंने कहा अच्छा हुआ । इस अनुभवों से मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि हम यहां एक दूसरे से पिछले लेने देने के कर्मों के कारण लेने देने के सम्बन्ध में मिलते हैं । कोई किसी का बाप बन जाता है कोई किसी का पुत्र बन जाता है, कोई किसी का भाई बन जाता है, किसी को कोई दुख दिया होता है, किसी को दुख सुख का सब संसार है । अगर यह बात समझ में आजाए तो हम लोग जो इस दुनिया में हाय-हाय करते फिरते हैं यह समाप्त हो जाए । मेरे पास ऐसे आदमी आते हैं जिनकी उनकी पत्नियों से नहीं बनती । उनके पिछले जन्म के सम्बन्ध होते है जिनके कारण यह समस्या होती है ।

तुम लोग आते हो मैं सोचता हूं कि यह क्या खेल हैं ? लेना-देना । कोई गुरु बन कर लेता है, कोई चेला या भाई बन कर लेता है । कोई बेटा या चाचा बन कर लेता है कुछ नहीं होता तो चोर या डाकू बन कर लेजाता है तो यह संसार है क्या ? लेन-देन का संसार है ।

लाहौर में एक बड़े प्रसिद्ध पण्डित थे । उनकी पत्नी बड़ी निकृष्ट प्रकृति की थी । वे बड़े भारी ज्योतिषी थे । बड़े बड़े आदमी उनके पास आते और पूछते कि पंडितजी क्या बात है । आपकी पत्नी यह क्या करती है । वो कहते कि यह पिछले जन्म का कुछ योग है । इसका हमसे कुछ लेना-देना है । आप लोग मेरे पास आते हैं, मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा । यह मैंने साबित कर दिया कि हमारा एक दूसरे का लेन देन है । अतः लेना-देना पड़ता है ।

इसका एक प्रमाण तो मैंने अपना दे दिया एक सुभाष के द्वारा दे दिया अब तीसरा उदाहरण सुनो--मैं भ्यानी स्टेशन पर असिस्टेन्ट स्टेशन मास्टर था । मेरी आदत है जहां मैं रहता वहाँ मेरा एक प्राइवेट डाक्टर रहता है वहां एक कट्टर आर्य समाजी आज्ञाराम मेरा फैमिली डाक्टर था मगर वो ज्योतिष को मानता था । उस जमाने में आर्य समाज व अन्य धर्मों की बहुत समालोचना करता था । मैंने आज्ञाराम से पूछा डाक्टर जी आप आर्य-समाजी होकर ज्योतिष को क्यों मानते हो । उसने कहा ? मेरे साथ एक

हुई। वह घटना क्या ? मैं म्यु हस्पताल में पढ़ता था जब मैं अनारकली से जारहा था तो किसी व्यक्ति ने पीछे से मेरी पीठ पर हाथ रखा। मैंने मुड़ कर देखा वो काले रंग का आदमी था और माथे पर तिलक लगाये हुए था आंध्रप्रदेश का मालूम होता था उसने पूछा तेरा नाम क्या है ? आज्ञाराम। क्या काम करते हो ? डाक्टरी पढ़ता हूं। बात सुनो। मुझे पीठ पर फोड़ा है। मैंने ज्योतिष लगाया कि फोड़ा मुझे क्यों है। १२ वर्ष होगये जाता नहीं मालूम हुआ कि मैंने किसी आदमी से १०० रु० उधार लिया था उसको वापिस नहीं किया। उसी कारण मुझे यह फोड़ा है। फिर मेरे ज्योतिष ने कहा कि वो आदमी जिसका मैंने रुपया देना है उस दिन उस समय अनारकली में मिलेगा। नाम के पहले आ होगा, डाक्टरी पढ़ता होगा। इसलिए मैं आज तुम्हारे पास आया हूँ। यह सौ रुपया ले लो और मेरा इलाज करदो। आज्ञाराम कहता है कि मैंने उसकी बात को मजाक समझा। मैंने सौ रुपया लेकर जेब में डाल लिये और कार्बनलोशन से तीन दिन फोड़ा साफ करके पट्टी करदी और वो ठीक होगया। जब वो ज्योतिषपी चलने लगा तो उसने कहा भाई पिछला कर्जा तो समाप्त होगया अब तूने मेरा इलाज किया है। मेरे पास तो देने को कुछ नहीं है। तुम्हारा टेबा हो तो मैं जन्मपत्री बना देता हूं। टेवा था उसने मेरा जन्मपत्री बना दिया। तो कहता था कि जो कुछ उसने मेरे लिए कहा शब्द वाई शब्द ठीक है। इसीलिए मैं ज्योतिष को मानता हूँ। इन बातों से क्या साबित हुआ ? कि हम इस संसार में रहते हैं यदि किसी से अनावश्यक फायदा लेते हैं या किसी से ऋण ले लेते हैं देते नहीं या अपना कर्तव्य को पूरा नहीं निभाते तो यह सब हमारे कर्मों का चक्कर बन जाता है। मैं इसीलिये सतसंगों में स्पष्ट कहता हूं क्योंकि मैं डरता हूं कि अगर मैं बात को पर्दे में रख कर गुरु लोगों से पैसा ले लूँ तो जो यह धोखा मैं करूंगा जब मैं कर्म के कानून को देखता हूं तो मैं बच नहीं सकता। खबर नहीं कि मेरा क्या हाल होगा। अब मेरी बातों को समझ गये होगे। मुझे भाषण देना नहीं आता। मैं तो बातें करता हूँ। इससे साबित होता है कि हम इस संसार में कर्जदार है। लेने देने के सम्बन्ध हैं।

मैं कहता हूँ कि ऐ इन्सान ! अपनी जाति गरज के लिये धोखा, फरेब चारसौ-बीस और हेराफेरी मत कर। तुम बात को भूल जा कि तूने नाम लिया हुआ है, अभ्यास करता है या यह करता है तो करता है। जो कर्म हमने तुमने किये हुए हैं उसके फल से हम या तुम कोई भी बच नहीं सकता। यही मैं कहना चाहता हूं।

यहाँ एक मैनेजर साहब आये हुए हैं उनका लड़का है ५-६ वर्ष हो गये शरीर नहीं चलता बल्कि केवल बोलता है। अब दुखी है। यह क्या है? यह पिछले जन्म का आपस में एक दूसरे का दुःख दिया हुआ है। वो दुःख लेना पड़ता है। इससे कोई बच नहीं सकता है। जब लेना देना खत्म हो जाता है आदमी चला जाता है। इसलिए मैं बहुत सोच समझकर चलता हूँ। हेरा-फेरी और चार सौ बीस नहीं करता। हर कार्य में अधिकार, अनाधिकार को विचार कर बड़ा सम्भल कर पाँव रखता हूं, ऐसा क्यों करता हूं? यह समझ कर कि इस संसार में कर्म का फल लेना देना पड़ता है। तुम लोग आंध्र प्रदेश से आये हो। मैं एक जिम्मेदारी समझता हूं। मैने यह काम क्यों किया? क्योंकि यह मेरे कर्म थे मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। अब मैं सोचता हूँ कि आदमी इस कर्म के चक्कर से तो नहीं निकल सकता। बचने का कोई उपाय है? वरना सारा जीवन हमेशा यह कर्म का चक्कर तो चलता रहेगा। जन्मते रहेंगे, मरते रहेंगे, फिर जन्मते मरते रहेंगे। इससे निकलने का कोई तरीका है? इसके लिए सन्त क्या कहते हैं? आपको स्वामी जी की वाणी सुनाता हूँ।

सतगुरु शरण गहो मेरे प्यारे, कर्म जुगात चुकाये।

वो कहते हैं कर्म की जुगात यानि अगर तुम कर्म के फल या लेने देने के चक्कर से बचना चाहते और इसे समाप्त कर देना चाहते हो तो सतगुरु की शरण लो। अब मैं सोचता हूं कि कोई आदमी किसी गुरु की शरण ले ले यानि उसको गुरु धारण कर ले तो क्या उसके कर्म कट जायगे? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं। केवल किसी को गुरु धारण करने से तुम्हारे कर्म नहीं कटेंगे। सतगुरु सच्चे ज्ञान का नाम है। किसी सच्चे

गुरु के पास बैठकर सच्चा ज्ञान प्राप्त करोगे, जब सच्ची बात समझ में आएगी, सच्चा अनुभव तुमको हो जायेगा तब तुम्हारे कर्म की जुगात कटेगी। केवल फकीरचन्द को या किसी और गुरु को गुरू बना लेने से, उससे नाम दान ले लेने से अगर तुम यह चाहो कि तुम्हारे कर्म कट जायंगे यह नहीं कटेगे।

भूल भ्रम से सब जग पचता अचरज बात न काहु सुहाये।
भाग है सब जग माया, बस यह निर्मल गति न कोई पाये ॥

मैंने आपको बता दिया कि सतगुरु सच्चे ज्ञान हैं, सच्चे अनुभव, सच्चे भेद या सच्चे राज को कहते हैं। वो कहते है कि संसार भ्रम में फंसा हुआ है। इस सच्चे ज्ञान की गति का राज या भेद पाये बिना कोई प्राप्त नहीं कर सकता। तो भेद हैं क्या? यही कि हमारा मन में जितने संकल्प विकल्प उठते हैं उनकी शक्लें बनता हैं या अपने ही रूप रंग दृश्य आते हैं यह सब माया है। इसके पीछे मत लगो। केवल प्रकाश और शब्द को पकड़ो ताकि जब तुम्हारा समय आये तुम्हारे मन के अन्तर रूप रंग न आने से मन के चक्र को छोड़कर तुम्हारी सुरत पारब्रह्म और शब्द ब्रह्म में चली जाए। इससे क्या होगा? जितने भी मन के चक्कर में रहते हुए तुमने पाप पुण्य, लेना देना जो कुछ कर्म आपने किया हुआ है क्योंकि आप मन के मण्डल से निकल कर प्रकाश के मण्डल में चले जाओगे इसलिए यहाँ का कानून यहाँ प्रभाव नहीं डालेगा। लाख तुमने पाप या जुर्म किये हुए हैं मगर मरते समय तुमको प्रकाश और शब्द आ जायेगा जितने भी तुम्हारे कर्म हैं वो तुम पर प्रभाव नहीं डालेंगे। क्यों? हिन्दुस्तान में जो जुर्म तुम करोगे अगर यहाँ से भाग कर अमेरिका चले जाओ तो यहाँ का कानून वहाँ प्रभाव नहीं डालता तुमको वहाँ कोई पकड़ेगा नहीं। ऐसे ही जो हमारे कर्म का चक्कर है। यह सब हमारे मन के तबके में है। जब हम मन के तबके से निकल जायेगे तो जितने भी हमने पाप और पुण्य किये हुये हैं यह सब समाप्त हो जायेगे। इसलिए कहा गया है—

नाम रत्ती हैं एक है, पाप जो रत्त हजार,
अद रत्ती घट संचरे, जार करे सब झार।

नाम क्या है ? अपने आप को प्रकाश और शब्द में तय कर देने व उस अवस्था में चले जाने का नाम नाम है । तो इस कर्म से बचने का तरीका क्या है ? ऐ निर्मला ! तू इतना किराया खर्च कर तीन चार व्यक्तियों के साथ सतसंग के लिए बम्बई से आई है । बेटी मैं तुमको प्यार करता हूं । तुम्हारे अज्ञान और प्यार का अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहता । मैंने तुम्हें अमरनाथ में डूबते हुए नहीं बचाया और न ही मुझे इस घटना का पता है । यह सब तुम्हारे अपने ही मन और विश्वास का खेल था ।

तुम अपने जीवन में अपना इष्ट प्रकाश और शब्द रखो ताकि जब तुम्हारा शरीर छूटे तो तुम्हारे सामने प्रकाश आ जाये । यही प्रकाश की तालीम हमारे सनातन धर्म में है । जब आदमी मरने लगता है तो उसके सामने दीपक रखते हैं । क्यों रखते हैं ? मरने वाले को यह स्मरण कराते हैं कि तेरा घर नूर या प्रकाश है । इसलिए उसको स्मरण कराया जाता है । तो इस कर्म के चक्र से बचने का उपाय क्या है ? कि इन्सान अपना इष्ट प्रकाश और शब्द रखे । प्रकाश और शब्द का साधन करे और इस बात का ज्ञान प्राप्त कर ले कि मन का यह जितना चक्र है यह सब कल्पित है, माया है । जब तक यह ज्ञान किसी को नहीं होता लाख कोई फकीरचन्द को या किसी को भी गुरु मान ले उसका बेड़ा पार नहीं होगा । यह वास्तविकता है जो मैंने कही है । आज दिन तक किसी महात्मा ने इस तरह स्पष्ट नहीं बताया । मैं पहला आदमी हूँ जिसने इस सचाई का डंका बजाया है ।

शब्द था—

सतगुरु शरन गहो मेरे प्यारे, कर्म जुगत चुकाये ।

अब समझ गये कि सतगुरु शरण क्या है ? किसी काबिल और निर्बंध पुरुष की संगत में जाओ जिसने यह गुरुआई अपने जाति मतलब या डेरे के लिए नहीं की है । जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए नहीं की है । जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए गुरुआई की है वो तुमको सच कैसे बतायेंगे । वो तो तुमको कहेंगे कि हर महीने आओ, पैसे देते रहो और हमारे जाल में फँसे रहो । तो सतगुरु नाम किसका है ? सच्चे ज्ञान का । मैंने जो समझा है वो मैं कहता

हूं । मैं यह दावा नहीं करता कि मैं जो कहता हूँ यही अन्तिम है । शायद मैंने जो कुछ समझा हो गलत हो । मुझे इसका कोई डर नही ।

क्योंकि मेरी नीयत साफ है । मैंने स्वयं जो अनुभव किया वो कहा । दावा नहीं करता :—

भूल भ्रम में सब जग फँसता, अचरज बात न काहु सुहाये ।

अब मैं जो सच्ची बात कहता हूं कि कोई राम, कोई देवी, कोई मुहम्मद किसी के अन्दर नहीं जाता । यह सब तुम्हारे मन के संकल्प और संस्कार का खेल है । कोई सच्चाई सुनने के लिये तैयार है सब भागते है :—

भागहीन सब जग माया, बस यह निर्मल गति कोई न पाये ।

निर्मल गति क्या है ? जब तुम मन के संकल्पों को बिल्कुल छोड जाओगे तो शेष क्या रहेगा ? प्रकाश । वो तो निर्मल है ही । वो कहते है कि सारा संसार भाग्यहीन है । उसकी उसको समझ नहीं है :—

जिन पर दया आदकर्ता की, सो यह अमृत पीवन चाहि ।

कितनी सच्चाई बताई है । कहते हैं यह बात सब कुछ है । मगर जिस पर परमात्मा की दया होती है वो इस ओर आता है । प्रत्येक व्यक्ति नहीं आ सकता । ध्यान दो यहां सतगुरु की दया नहीं बल्कि आदकर्ता की दया लिखी हुई है : –

कहाँ लग महिमा कहूं इस मन की,
बिरले गुरुमुख चीनत ताहि ।

वो कहते हैं इस अवस्था को । यानी इस सतज्ञान की प्राप्ति को । इसमें ठहरने की गति को कोई बिरला गुरुमुख ही पाता है । मैं संत हो गया मगर मुझसे अभी तक वहां ठहरा नहीं जाता । मैं आपको सच्ची बात कहता हूं । मैं जान गया हूं । मगर यदि मैं वहाँ ठहरना चाहूं तो वहाँ ठहर नहीं सकता । फिर मन में आ जाता हूँ । क्या करू ? यह अपने बश की बात नहीं । मैं स्वयँ सोचता हूँ कि भई ! तूने इतना जीवन सफर किया तू वहाँ पूर्णत नहीं ठहर सकता तो दुनिया मे तू क्या आशा करता है । आप गृहस्थी क्या करोगे --

बिन गुरु चरन औरनहिं भावे, इस आनन्द में रहे समाये ।

अब देखो वो कहते हैं कि बिना गुरु चरन के दुनिया ने जो बाहरी गुरु के चरण हैं उनको गुरु चरण समझा हुआ है। यह भी किसी हद तक है मगर असली गुरु के चरण प्रकाश, नूर है। यही राधास्वामी मत के संचालक राय सालिगराम साहिब ने अपनी प्रेम वाणी में लिखा है। सतगुरु कौन है ? सतगुरु शब्द रूपी राधास्वामी दयाल। उनके चरण प्रकाश हैं। यही हिन्दू शास्त्र व गायत्री मन्त्र कहता है। इस सन्तमत और सनातन धर्म में कोई अन्तर नहीं है। सचाई कोई नहीं बताता और करे भी क्या लोग अमल नहीं कर सकते। अमल करना कोई आसान नहीं है ? मेरी आयु बीत गई। मैंने बहुतेरा साधन किया। अब भी हर समय यदि मैं चाहूं कि मन को छोड़ कर उधर चला जाऊं। किसी समय ऐसे हालात होते हैं मन इतना चंचल होता है कि मैं कितना भी प्रयत्न करता रहूं एक दम प्रकाश और शब्द में नहीं जा सकता। फिर मैं क्या करता हूँ ? फिर मैं सुमिरन करता हूं। तब ध्यान में जाता हूँ तो तब मैं ऊपर जाता हूं। यह बड़ा मुश्किल कार्य है। मगर इसका एक ही तरीका है कि चले चलो। यदि समझ में बात आजाये तो धीरे-धीरे चलते रहो, तप करते रहो। कोई न कोई कारण बन जाएगा —

दर्शन करत पिण्ड सुध भूलि, फिर घर बाहिर सुध क्या आये।

देखो ! बाहिर में भी प्रेम है। जब जन्दर में प्रेम करता है तो सुध जाती है। न घर न पुत्र याद रहता है। जब तुम अभ्यास करने लगते हो अभ्यास करो अपने आप ही भूल जाते हो--

ऐसी सुरत प्रेम रंग भीनी, तिनकी गति माया कहूं सुनाये।

वो कहते हैं ऐसी सुरत जो इस तरह प्रेम में अपने अन्दर चलती है वो बहुत उत्तम है। उसकी गति मैं क्या कहूँ--

जोग, बिज्ञान, ज्ञान सब रूठे, ये गत उनमें देखे न ताहे।

किन से प्रेम ? उस परमतत्व से। क्योंकि उसका कोई रूप नहीं है। इसलिए प्रारम्भ में उसको किसी न किसी रूप में मानना पड़ता है। परन्तु यदि तुम सारी उमर बाहरी गुरु के पीछे लगे रहो तो फिर काम नहीं बनेगा। मैं नहीं चाहता निर्मला। तुम लोगों को हमेशा फकीरचन्द के साथ बाँध

रखूं । कल को फकीरचन्द मर जाएगा । फिर सिर पीटोगे । फिर कहाँ जाओगे ? इसलिए मैं बात को साफ कर जाना चाहता हूँ ताकि आप लोगों को बात को साफ कर जाना चाहता हूं ताकि आप लोगों को मेरे मरने के बाद कोई दूसरा गुरु न करना पड़े । बात तुमको सच्ची बतादी कि यह बात ऐसे नहीं ऐसे हैं । शेष संसार का काम है । सतसंग में व्यक्ति जाता रहता है और आता रहता है । इसका कोई प्रश्न नहीं—

बड़भागी कोई विरला प्राणी, जिन यह निमत मिली आद दुदाई ।

कोई कि भाग्यशाली व्यक्ति को ही, खबर हो सकती है । जिसको लगन होती है । मुझे बचपन से लगन थी । अब मैं पहुंच तो गया, इस कर्म की जुगत से निकलने की युक्ति आगई, तरीका मिल गया । मुझे रास्ते का तो पता चल गया मगर अभी हमेशा के लिए नहीं निकल सका । यानी मुझसे वहां ठहरा नहीं जाता । सच्ची बात आपको बताता हूँ—

राधास्वामी कहत सुनाये, यह आरती कोई गुरुमुख गाये ।

निर्मला तू परमार्थ के विचार से ही मेरे साथ सम्बन्धित हुई है । इसलिए मैं अपना कर्त्तव्य आज पूरा कर देता हूं । गुरु तेरे अन्तर रहता है न कि होशियारपुर में रहता है । मेरा शरीर भी गुरु नहीं है । गुरू ज्ञान, समझ और विवेक का नाम है । क्योंकि वहाँ सुरत नहीं जाती इसलिए उसका एक रूप मानना पड़ता है । जब वो रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है अपने किसी गुरू का या और का उसको यह मत समझो कि वो फकीरचन्द है या किसी और गुरू का रूप है । उसको यह समझो कि वो परमतत्व का रूप है । जिस तरह यह दाता दयाल की मूर्ती है । हम इसे पत्थर तो नहीं कहते । ऐसे ही जो रूप तुम बनाते हो । उसे यह मत समझो कि वो राम है जो दशरथ के घर पैदा हुआ है या यह कृष्ण है जो गोकुल में पैदा हुआ या यह फकीरचन्द है जो होशियारपुर में रहता है । उसको परम तत्व का रूप समझो । उसको पूर्ण मानो । सब कुछ मिल जाएगा । मैंने कभी सोचा ही नहीं कि मेरा गुरू मरा हुआ है । तो इससे क्या हो जाएगा ? तुम्हारा जो साधन है अगर नहीं तुम्हारा शब्द प्रकाश नहीं खुलता क्योंकि तुमने उस रूप में शब्द प्रकाश माना

हुआ है हो सकता है तुम्हारा कल्याण हो जाये। क्योंकि तुमने उसको शब्द और प्रकाश रूप माना हुआ है और जो तुम गुरु के रूप को समझने या बाबा सावनसिंह हैं तो तुम लाख प्रयत्न करते रहो तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होसकता हाँ तुमको दुनिया मिल जाएगी सिद्धि शक्ति आजाएगी। इसलिए कबीर साहिब ने कहा है—

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिए अँध,
दुखी होंय संसार में, आगे यम का फंद।
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीना नाँहि,
कहे कबीर ता दास को, तीन ताप भरमाहि।

मैं स्पष्ट क्यों बताता हूँ ? ताकि जो लोग मुझ पर विश्वास करते हैं, मैं उनको अज्ञान में न रखूं। उनको धोखे में नहीं रखना चाहता। अगर मेरा ही रूप देखते हो तो उसको मत समझो कि जो रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है वो मेरा है। मैं तो स्पष्ट कहता हूँ कि मैं कहीं नहीं जाता। उसको पूर्ण मानो तुम्हारा काम बन जायगा। मैंने रास्ता बिलकुल आसान कर दिया कोई कठिनाई नहीं। मन के अन्तर तरह तरह के विचार आते हैं, इनको माया समझो हैं नहीं। यह कल्पना है। बस इतनी ही बात है। ज्यादा और झगड़े की बात नहीं। बेटी तू तो मेरे पास आती है मेरे पास केवल शुभ भावना के और कुछ नहीं। तुम मुझे बम्बई बुलाना चाहती हो मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। फिर भी यदि स्वास्थ्य ठीक रहा तो आ जाऊँगा। तुम जो इतना रुपया खर्च करोगी अपनी जिम्मेवारी और अपनी जेब आप देखो। मुझे नहीं पता। मेरे जिम्मे कोई पाप नहीं। मैंने आपको धोखा नहीं दिया, किसी से हेरा फेरी नहीं की, किसी को अपने जाल में फँसाने की कोशिश नहीं की। सच्ची बात बता दी। आज सतसंग में मैंने बता दिया कि हम इस संसार में क्यों आते हैं हम एक दूसरे के ऋणी हैं। यह गोपाल दास है मुझे याद है ३० वर्ष हुए मेरे मकान में आया यह पहली बार मिला मेरी पत्नी बैठी हुई थी। मैंने कहा भाग्यवान ! पिछले जन्म का लेना देना है। इसने देना है यह आ गया है सेवा करेगा। आज देखलो इसने उसकी भी

सेवा की। अब इसके बाल बच्चे हैं। मेरी लड़की है उसकी सेवा करते हैं। तो क्या है यह ? यह पिछले जन्म का लेना देना है। हम एक दूसरे के ऋणी हैं। तो मैं यह उसूल रखता हूँ कि खुशी से अगर मेरे दिल में किसी को देने का भाव आता है मैं दे देता हूं। तो मैं यह समझता हूँ कि मैंने इसके पिछले जन्म का देना है। मेरे पास कई ऐसे आदमी आते हैं कोई चीज अपने आप खुशी से देते है तो इसका अर्थ है कि इसने पिछले जन्म का मेरा देना था। अगर मैं यह इच्छा रक्खू कि यह मुझे दे और फिर मैं उसे रक्खू तो वो मेरा कर्म बन जाएगा। यदि क्योंकि मैंने अपनी गरज रखी कि वो व्यक्ति मुझे यह दे दे या आप यह दे दे। और उसके लेने के लिए मैंने कुछ बातें की या हेरा फेरी की। वो जो इच्छा करके तुमसे लूगा वो मेरा कर्म बन जाएगा। स्वाभाविक अगर कोई व्यक्ति प्रेम से कोई वस्तु देता है वो तो पिछले जन्म का लेना देना भुगतता है। यह विशेष बात है। मुझे वर्णन करना नहीं आया। मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ उसे समझो। हम स्वाभाविक खुशी से जो कुछ देते लेते हैं वो हमारा पिछला कर्जा खत्म होता है और अगर हम कोई काम स्वार्थ के लिए करते हैं तो फिर वो हमारा कर्म बन जायेगा।

तो आप लोग आते हैं। हम सबको एक दूसरे से दुख सुख आते रहते हैं। बाकी निर्मला बेटी घरों में शान्ति रखा करो। तुमको बता देता हूं। कोई पुत्र नहीं, कोई पुत्र वधू नहीं, कोई पति नहीं, कोई भ्राता नहीं, कोई चाचा नहीं। यह तो चार दिन का खेल है। बेटी जब तक खेल है खेल खेलो। अपना यह विचार रखो कि आप तथा मैं यहाँ के रहने वाले नहीं हैं। यह तो चार दिन का जीवन है।

आज गये, कल गये, परसों गये। चले जायेगे बस। जो कुछ है तेरा अपना मन हैं। आप मन को सम्भाल कर रखो। खुशी का जीवन बिताओ। बस हम तो एक जानते हैं जिसने पैदा किया है वो खाने को रोटी तो देगा ही। यह सारी दुनिया अपने ही मन के चक्र में आकर अपने ही मन की चाल में फँसी हुई है। जीवन में अपने मन को ख्यालात के साथ मत बाँधो। अपना इष्ट तो रखो। बस। मरने से पहले प्रकाश और शब्द को पकड़ो। सच्चे

बनो। पुकार करो। मालिक सबका है। गुरु सदा तुम्हारे साथ है वो तुम्हारा है तुम उसके हो। अगर संसार सागर से तरना चाहते हो तो अपने अन्तर साधन करो।

— × —

नवजीवन सुधार से—
गतांक से आगे—

दूसरा प्रसंग

यम

लेखक— महर्षि शिवव्रतलाल वर्मन

भूमित्र बोले 'भगवन ! नवयुवक अनुभवी नहीं होते अज्ञान उनमें पहले से दिखाई देता है। ऐसी दशा में यदि उनसे भूल हो जाय तो आश्चर्य की बात नहीं है परन्तु उससे भी आश्चर्यजनक आपका वचन है। पहले तो आप अज्ञान बच्चों को ब्रह्म कहते हैं। ब्रह्म ज्ञान और बुद्धि का भण्डार है। उसमें नाम मात्र भी भ्रम या अज्ञान नहीं है। दूसरे आपकी बातों से यह समझ में आता है कि कोई और मनुष्य या शक्ति अपना प्रभाव डालकर राह से बे राह कर देती है। यह हँसी की बात है। ब्रह्म को कौन अपना प्रभाव डालकर भुलावा दे सकता है ! यह दूसरी शंका है।'

मैं हँसा 'प्यारे लड़को ! ब्रह्म में बुद्धि और ज्ञान स्वाभाविक है यह तो मैं मानता हूं परन्तु उसमें साथ साथ बढ़ने और सोचने का भी स्वभाव है इसलिये उसे राह से बेराह कर दिया जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। तुमने वेदान्त के सिद्धान्त सुने। ब्रह्म शब्द के विषय में विशेष भाव को दिल में जगह दे रखा है इसलिए तुमको भ्रम होता है। कुछ न करो, केवल शब्द

की जड़ की तह में चले जाओ। उसके शब्दार्थ पर विचार करो। आप ही असलियत या सच्चाई का पता लग जायगा। जब मैंने उसके शब्दार्थ (मौलिक अर्थ) बढ़ने और सोचने के बता दिये जो उसका गुण है तो फिर तुम व्यर्थ ही बहकी-बहकी बातें क्यों करते हो। जैसा नाम होता है वैसा ही उसमें गुण भी होता है यथा नाम तथा गुणः। इस समय तुम थोड़ी देर के लिये ब्रह्म के विषय में पूर्ण ज्ञान के विचार को छोड़ दो। बुद्धि विवेक, समझ-बूझ सोच विचार के साथ केवल ब्रह्म के काम ब्रह्म के गुणों की ओर ध्यान दो और फिर तुम मेरे तात्पर्य को समझ जाओगे। यह तो तुमको पहले से विश्वास होगा कि तुमसे मेरा कोई अपना प्रयोजन नहीं है। तुम प्रश्न करने आये हो और मैं तुमको उत्तर दे रहा हूं। मेरी बातें सच्ची और खरी होंगी और यदि ऐसी नहीं हैं तो मुझे पागल समझो। इनमें से यदि एक भ्रम भी तुम्हारे चित्त में है तो फिर मेरी बात कभी न सुनो। स्वार्थवश मनुष्य धोखा देता है, पागल आदमी सिड़ी कहलाता है। बोलो तुम मुझे क्या समझ कर मुझसे प्रश्न करने आये हो ?

दोनों ने कहा 'आपका अपना कोई भी स्वार्थ नहीं है। हम आपको पागल या सिड़ी नहीं समझते, नहीं तो आपके पास हमारा आना असम्भव होता।'

मैंने कहा, 'तुम मुझे 'आप्त पुरुष' समझते हो। 'आप्त' संस्कृत धातु 'आप' (प्राप्त करने) से निकला है। जिससे विद्या या ज्ञान प्राप्त किया जाता है या जिससे किया जाय वह आप्त पुरुष कहलाता है। यह उसके मौलिक अर्थ हैं। योगिक अर्थ 'विश्वास पात्र' निःस्वार्थी मित्र 'प्राप्त किया हुआ' 'प्रमाणिक' इत्यादि हैं। यदि तुम मुझे ऐसा समझते हो तो मेरी बात सुनो और ध्यान देकर उसे विचारो। यदि वह सत्य है, उस पर आरूढ़ हो रहो। संस्कृत में इन्हें श्रवण' [सुनना] मनन [सोचना] और निदिध्यासन [सोचे हुए पर आरूढ़ हो रहना] कहते हैं।'

भूमित्र बोले, 'आपको हम आप्त पुरुष मानते हैं।'

मैंने कहा—'फिर मेरी बात मानो और मानते हुये चलो, परन्तु अन्ध विश्वासियों की तरह नहीं। मेरे यहाँ अन्ध विश्वासियों का काम नहीं है। सोच समझकर तब मानो और उस पर आरूढ़ हो रहो, तब काम निकलेगा। मैंने कहा तुम ब्रह्म हो क्योंकि तुम मे बढ़ने और सोचने का गुण है। यदि ब्रह्म शब्द के मौलिक अर्थ में यह दोनों बातें हों तो मानो नहीं तो जाने दो।'

विश्वमित्र ने कहा, ब्रह्म शब्द की मौलिक व्याख्या में यह दोनों ही गुण आ जाते हैं।

मैं बोला, तो फिर सच्चे दिल से मानो कि तुम ब्रह्म हो, तब मैं और बातें सुनाने और तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देने लगूँ।

दोनों ही ने कहा, हाँ! हम ब्रह्म हैं। बढ़ने और सोचने का भाव हमारे अन्दर है। इसे असत्य कैसे कहा जा सकता है?

मैंने कहा 'अच्छा! अब प्रश्न करो।'

भूमित्र ने पूछा, ब्रह्म को भ्रम या अज्ञान कैसे होता है?'

मैंने उत्तर दिया, 'इसके कई कारण हैं, जैसे माता पिता के विचार का प्रभाव, सामाजिक भ्रम, मेल जोल का असर, मानसिक भय, काल चक्र का प्रभाव, रुकावट और बाधा डालने वालों के स्वार्थिक कर्म इत्यादि। नवयुवकों को राह से बेराह करने के लिये संसार में बहुत से सामान हैं जिनसे उनको उन्नति और बुद्धि विवेक को भी बहुत कुछ धक्का पहुंचता है और वह अपनी इच्छा अनुसार उन्नति नहीं कर सकते। यह सूची अपूर्ण है परन्तु इसके सिलसिले में जब तुम बात चीत करते चलोगे आप ही आप बहुत सी बात तुम्हारी समझ में आती जायेगी और तुम्हारा अनुभव बढ़ता जायेगा। यदि तुम समझ बूझ के साथ जीवन व्यवहार में उससे काम लोगे तो तुमको सफलता अवश्य ही प्राप्त होगी। यह सब के सब भ्रम कहलाते हैं। इनकी ओर से ध्यान हटा लेना चाहिये। मैं इसे यम कहता हूं। 'यम' संस्कृत में त्यागने या निकालने को

कहते हैं। पहले भ्रम को चित्त से दूर करो यम हो गया। फिर आवश्यक और काम की बातों की ओर ध्यान दो। यही मेरे यहाँ मेरे यहाँ नियम है। नियम संस्कृत में ग्रहण करने को कहते हैं। ग्रहण वही होना चाहिये जो हितकारी और लाभदायक हो।

—०—

तीसरा प्रसंग

यम और नियम

भूमित्र ने प्रश्न किया—माँ बाप के बुरे मानसिक भाव बच्च पर कैसे प्रभाव डालते हैं? क्योंकि संसार में देखा जाता है कि अपने से अच्छी अवस्था में दूसरे को कोई नहीं देखना चाहता। केवल माता और पिता ही अपने लड़कों को अपने से कहीं अच्छी दशा में देखने की प्रबल और सच्ची इच्छा रखते हैं।'

मैंने जवाब दिया —'यहाँ उनकी इच्छा का प्रश्न नहीं है। उनके बुरे मानसिक भाव पर बात छिड़ी है और वह एक दो नहीं किन्तु अनगिनत है। मैं केवल एक शब्द 'शिक्षा' को लेता हूँ और सब बातों को छोड़ देता हूँ। जितने बच्चे ससार में पैदा होते हैं सब पर देश काल और वस्तु का प्रभाव पड़ता हूँ। उनके जन्म के समय, सामान और रहन सहन में भिन्नता होती है इसलिए सब के विचार और स्वभाव एक तरह के नहीं होते। मन बुद्धि समझ बूझ सबकी यही दशा है। भूल में पड़कर माता पिता अपने बच्चों को एक ही ढंग की शिक्षा देना चाहते हैं अपने जीवन में जो उद्यम वह स्वयं करते थे बच्चों को भी वही सिखाना चाहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि स्वाभाविक भाव के विपरीत और विरुद्ध होने के कारण लड़के का भाव खुलकर उभरने नहीं पाता। धर पकड़ और धरे बाँधे का काम अच्छा नहीं होता। नतीजा उसका यह होता है कि सफलता

प्राप्त नही होती । यदि लड़के के चित्त के भाव को देखकर उसी राह पर लगाया जाता तो फिर क्या कहना था ! बच्चों के भावों को कुचल २ कर बेकाम कर दिया जाता । मैं इसे बाल वध या बाल हत्या कहता हूँ । लड़के का चित्त चित्रकारी में लगता है । आप वकील हैं । वह उसे चित्रकारी न सिखायेगा, किन्तु उसका जीवन नाश करके वकील बनाने की इच्छा रखेगा । सम्भव है कोई लड़का उधर ध्यान देकर बकील हो जाय परन्तु सब के सब ऐसा नहीं बन सकते और न रचना में ऐसा नियम है । बच्चों को एक ही लकीर पर चलाना बहुत ही भूल है । यदि सफलता प्राप्त नहीं होती तो उनका क्या दोष है ? समय बदलता रहता है । समय समय की आवश्यकताएँ भिन्न भिन्न हुआ करती हैं । इस दृष्टि से जो शिक्षा मां बाप को मिली है या जो काम उन्होंने अपने जीवन में किया है वही उन बच्चों के लिए लाभदायक और हितकारी नहीं हो सकता । यह बच्चे और समय में पैदा हुए हैं ।

भूमित्र ने कहा—'इस पर बहुत से प्रश्न हो सकते हैं । देश काल और वस्तु के अर्थ बहुत ही लम्बे चौड़े हैं । इसके अलावा एक बात यह पैदा होती है कि हम ब्राह्मण के लड़के हैं । सम्भव है हमारे भाव क्षत्रियों जैसे हों, तो क्या हम अपने ब्राह्मणत्व को जबाव दे दें और क्षत्रियों की शिक्षा पाकर उनके उद्यम को ग्रहण कर लें । फिर हिन्दुओं का जाति भेद नष्ट भ्रष्ट हो जायेगा ।

मैंने उत्तर दिया—यदि सारी बातों पर शास्त्रार्थ करोगे तो समय नष्ट होगा और तुम्हारे आने का तात्पर्य सिद्ध न हो सकेगा । इसलिये केवल काम से काम रखो । देश काल और वस्तु का प्रभाव हम पर अवश्य हो पड़ेगा । जो सामान राजा के घर है प्रजा के घर नहीं है । जो समय प्रातःकाल का है वह सन्ध्या का नहीं हो सकता । जो जगह गङ्गा के किनारे है वह जङ्गल में नहीं हो सकती । आदमी जैसे देश काल और वस्तु में पैदा होता है वैसा ही असर भी अपने

साथ रखता है। ग्रह नक्षत्र तारा मंडल दैविक शक्तियों के जमा और ऋतु इत्यादि सभी अपना अपना विशेष प्रभाव रखते हैं। य कारण है कि एक ही समय के पैदा हुए मनुष्यों के जीवन में भिन्नता होती है और होनी भी चाहिए। इनसे बचाव महा कठिन है। मालिक को लाख लाख धन्यवाद है कि तुम जैसे ब्रह्म को इस द्वन्द को रचना में जगह मिली है। यह संसार द्वन्द का स्थान है। इससे काम लो। भिन्नता कभी भी मिट नहीं सकती। इस फेर में पड़ना समय को नष्ट करना हैं। जैसे हो वैसे करो। द्वन्द ही में काम के चुनाव का अवसर मिलता है। एक बात तो यह हुई अब दूसरी बात तुम्हारे ब्राह्मणत्व की है। मैं कब कहता हूं कि तुम ब्राह्मण न रहो, परन्तु पहले ब्राह्मण शब्द पर विचार करो। वह भी बढ़ने और सोचने का सिद्धान्त अपने साथ रखता है। तुम ब्राह्मण हो और ऐसे समय में पैदा हुए हो कि मंगल बलवान था। इसलिए तुमको हृष्ट पुष्ट और बलवान होना है। यदि तुम्हारा ध्यान शारीरिक उन्नति की ओर है, तो बलवान बनो और पहलवानी के काम सीखो। क्षत्रियों के सारे गुण तुम में आ जाय। फिर आचार्य बनकर औरों को उसे सिखाओ। इससे तुम्हारे ब्राह्मणत्व को क्या हानि पहुंचती है। कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा और परशुराम ब्राह्मण ही तो थे। जो क्षत्रियों के आचार्य और गुरू कहलाये। इससे वर्णाश्रम को क्या धक्का पहुंचता है? सृष्टि में मनुष्य मात्र को सोचने विचारने और उन्नति करने का अवसर प्राप्त है। माता पिता बच्चे के स्वभाव के अनुसार उसे काम में लगायें। इस बात में ब्राह्मण और शूद्र दोनों का ही अधिकार बराबर है। जो हिन्दू धर्म की असली समझ रखते हैं और शास्त्रों का सच्चा अर्थ समझते हैं उन्हें ऐसे भ्रम नहीं हुआ करते। तुम अपने आपको ब्राह्मण कहते हो। वर्णाश्रम की दृष्टि से मैं क्षत्री हूँ। तुम मुझे आप्त पुरुष मानकर मुझसे ज्ञान सीखने आये हो। इससे तुम्हारे ब्राह्मणत्व में क्या कमी

आई ? पहले भी ब्राह्मण ऋषि महाराजा अजात शत्रु और महाराजा जनक आदि से ज्ञान सीखने जाया करते थे। अब भी वही बात है। इससे सामाजिक व्यवस्था भंग नहीं होती। इस भ्रम को चित्त से दूर करो। यही सच्चा यम है।'

भूमित्र बोले, 'आप सच कहते हैं। हिन्दू इस समय बहुत ही भूल और भ्रम में पड़े हुये हैं और अपने धर्म कर्म की कुछ भी समझ नहीं रखते। माता पिता के अशुभ विचार और सामाजिक और धार्मिक भ्रम की असलियत को मैं समझ गया। अब मेल जोल और आस पास के लोगों के प्रभाव की व्याख्या कीजिये कि वह नवयुवकों का सफलता प्राप्त करने में कैसे बाधक हैं।'

मैंने कहा, 'यह साधारण बात है। बुरी संगत में रहोगे बुरे बनोगे। सफलता प्राप्त न करना सबसे बड़ी बुराई है। अच्छा संगत करोगे अच्छे बनोगे। सफलता प्राप्त करना ही सबसे बड़ी भलाई है। अच्छे लोगों के रंग ढंग को देखकर काम में लगो। बुरे आदमियों के चाल चलन देखकर उनसे कतराकर चलो। जहाँ रहो उसे स्वच्छ और पवित्र रखो जिससे चित्त में फुर्ती और उमंग पैदा हो। जहाँ कहीं भी रहो उसे अपवित्र और घृणित न बनावो, नहीं तो दिल दबा रहेगा और सुस्त, अपाहिज और निकम्मे बनोगे। यह सब बहुत ही साधारण बातें हैं। बुरी संगत और बुरी जगह को छोड़ देना यम और अच्छी संगत और अच्छी जगह को ग्रहण करना ही नियम है।'

भूमित्र ने पूछा, 'मानसिक भय और भ्रम से आपका क्या तात्पर्य हैं ?

मैंने जबाब दिया, द्विचिताई में पड़ जाना, अपने ऊपर विश्वास न रखना, अपने विचार को अटल रखना, नियम विरुद्ध बिना सोचे समझे कोई काम करना, कुछ भी काम न करना या उसे अधूरा छोड़ना, हर एक बात पर विश्वास कर लेना, उन लोगों से राय लेकर साहस छोड़ बैठना। (शेष अगले अङ्क में पढ़ें)

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ । उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम	:	श्री. श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है ।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG-28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाहो' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh